महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा

पीएच.डी. हिंदी की उपाधि के लिए प्रस्तुत

शोध प्रबंध

शोध छात्रा

सालवे आशा गोविंदराव

शोध निर्देशिका

प्रो. कल्पना गवली

अध्यक्ष, हिंदी विभाग

महाराजा स याजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा

सूर्यबाला का गद्य साहित्य एक : अध्ययन

१. **शोध प्रेरणा एवं विषय प्रवेश।**

२. **विषय का महत्व।**

३. **शोध प्रबंध रूपरेखा।**

४. **शोध प्रबंध में विषय वस्तु का विवरण।**

५. **संदर्भ ग्रंथ सूची।**

१. शोध प्रेरणा एवं विषय प्रवेश

प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा के समय से ही मुझे हिंदी भाषा के प्रति विशेष लगाव एवं रुचि रही है।इसका एक कारण यह भी है कि मेरी शिक्षा का माध्यम भी हिंदी ही था मैंने अपने अथक परिश्रम से आज तक हिंदी साहित्य के प्रति अपने लगाव और रुचि को बरकरार रखा है। साहित्य मानव समाज का दर्पण होता है साहित्य का मानव समाज पर गहरा प्रभाव पड़ता है।साहित्य की विधाओं में बच्चों से लेकर बड़े वृद्धों के मन को चुंबकीय गुणों से बांध रखने वाले विधा कथा साहित्य है। सूर्यबालाजी मुझे एक ऐसे कथाकरो में लगी जिनकी कहानियों उपन्यासों ने मेरे अंतर्मन पर गहरा प्रभाव डाला। उनकी कहानियां और उपन्यास आधुनिक जीवन से प्रेरित और आधारित है वह अपने साहित्य में स्त्री पात्रों को निधि ही और लाचार दिखाने में विश्वास नहीं करती और इसी कारणवश मैंने सूर्यबाला का गद्य साहित्य एक अध्ययन शीर्षक को केंद्र स्थान में रखकर शोध कार्य करना चाहती हूं। मैं आशा करती हूं कि मेरे माता-पिता शोध निर्देशक समस्त गुरुजनों के आशीर्वाद एवं निर्देश साला सूचन से यह शोध कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण कर सकूंगी।

२. विषय का महत्व

गद्य साहित्य में जिन महिला साहित्यकारों ने योगदान दिया है उनमें है सत्यवती मलिक, मनु भंडारी ,कृष्णा सोबती, रजनी पानीकर ,उषा प्रियंवदा आदि महिला साहित्यकारों का समावेश प्रमुख रूप से किया जा सकता है।इस युग के महिला साहित्यकारों ने अपने साहित्य में समाज परिवार में व्याप्त समस्याओं को उजागर किया है सूर्यबाला एक सुप्रसिद्ध साहित्यकार

है। उनका साहित्य वैविध्य पूर्ण हैं उन्होंने हर विधा पर अपनी लेखनी चलाई है उनमें उपन्यास कहानी व्यंग्य और बाल साहित्य मुख्य हैं।

सूर्यबालाजी ने अपने उपन्यासों एवं कहानियों में कई तरह की समस्याओं का निरूपण परोक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से किया है।इन समस्याओं के अंतर्गत सामाजिक समस्याएं ,राजनीतिक समस्याएं, महानगरीय समस्याएं तथा मूल्य विघटन की समस्याएं एवं कई प्रकार की अन्य समस्याओं का चित्रण सूर्यबाला जी ने किया है।अतः उनके गद्य साहित्य को केंद्र में रखते हुए इन समस्याओं का अध्ययन करना मेरा उद्देश्य रहेगा।

३. शोध प्रबंध रूपरेखा

सूर्यबाला का गद्य साहित्य एक: अध्ययन

प्रथम अध्याय - सूर्यबाला का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

द्वितीय अध्याय - (अ) उपन्यास का उद्भव एवं विकास

(ब) कहानी का उद्भव एवं विकास

(क) व्यंग्य का उद्भव एवं विकास

(ड) बाल साहित्य का उद्भव एवं विकास

तृतीय अध्याय - सूर्यबाला के उपन्यासों का मूल्यांकन

चतुर्थ अध्याय - सूर्यबाला की कहानियों का मूल्यांकन

पंचम अध्याय- सूर्यबाला का व्यंग्य एवं बाल साहित्य का मूल्यांकन

षष्टम अध्याय- (अ) सूर्यबाला के उपन्यासों में निरूपित समस्याएं

(ब) सूर्यबाला के कहानियों निरूपित समस्याएं

(क) व्यंग्य साहित्य में निरूपित समस्याएं

(ड) बाल साहित्य में निरूपित समस्याएं

सप्तम अध्याय- समकालीन हिंदी महिला साहित्यकारों में सूर्यबाला का स्थान एवं साक्षात्कार

उपसंहार

संदर्भ ग्रंथ सूची

४. शोध प्रबंध में विषयवस्तु का विवरण

प्रस्तुत शोध प्रबंध को सात अध्याय में विभक्त किया जाएगा।प्रथम अध्याय के अंतर्गत सूर्यबाला के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को ध्यान में रखते हुए उनके जन्म से लेकर साहित्य जगत में उनके पदार्पण और उनके साहित्य में योगदान और उनके रचनाओं का संक्षिप्त विवरण होगा। द्वितीय अध्याय में उपन्यास का उद्भव और विकास,कहानी का उद्भव और विकास, व्यंग्य साहित्य का उद्भव और विकास तथा बाल साहित्य का उद्भव एवं विकास का समावेश है। तृतीय अध्याय के अंतर्गत सूर्यबाला द्वारा रचित उपन्यासों का मूल्यांकन करते हुए समीक्षात्मक दृष्टी से वर्णन करूंगी।चतुर्थ सूर्यबाला की कहानियों का मूल्यांकन करते हुए उसमें समाहित अनदेखे पहलुओं पर प्रकाश डालने का मेरा संपूर्ण प्रयास रहेगा।पंचम अध्याय में सूर्यबाला के व्यंग्य साहित्य एवं बाल साहित्य का मूल्यांकन करने का मेरा हेतु रहेगा। षष्टम अध्याय के अंतर्गत सूर्यबाला के उपन्यासों,कहानियों,व्यंग्य रचनाओं (साहित्य) एवं बाल साहित्य में मौजूद समस्याओं को उजागर करने का मेरा उद्देश्य है।सप्तम अध्याय में समकालीन महिला साहित्यकारों में सूर्यबाला का स्थान दर्शाते हुए उनसे साक्षात्कार का मेरा रहेगा। (कोरोना के काल को देखते हुए शायद टेलिफोनिक या किसी सोशल मीडिया के स्त्रोत के माध्यम से जैसे सूर्यबालाजी अनुकूल समझें वैसे उनसे साक्षात्कार करने की कोशिश रहेगी)सभी अयोध्या के अंत में संदर्भ सूची का विवरण अलग से दिया जाएगा।

प्रथम अध्याय : सूर्यबाला का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

शोध प्रबंध के प्रथम अध्याय के अंतर्गत सूर्यबाला के व्यक्तित्व एवं कृतित्व में सूर्यबाला का जन्म,जन्म स्थान,घर,परिवार,पारिवारिक जीवन शैली के अंतर्गत उनके पालन-पोषण,माता-पिता का उनके प्रति दृष्टिकोण, सूर्यबाला का बहिरंग,अंतरंग व्यक्तित्व की चर्चा की जाएगी। सूर्यबाला के बचपन से लेकर अब तक के जीवन यात्रा के अंतर्गत पारिवारिक जीवन शैली,सूर्यबाला का कार्यक्षेत्र उनके व्यक्तित्व में निहित गुणों की चर्चा करूंगी। सूर्यबाला के साहित्य में योगदान के लिए उनको मिले सम्मान पुरस्कारों की सूची प्रस्तुत की जाएगी।इसके उपरांत सूर्यबाला द्वारा रचित उपन्यास कहानी संग्रह बाल साहित्य की प्रमुख कृतियों की भी सूची पेश करूंगी।

सूर्यबाला के व्यक्तित्व के पश्चात सूर्यबाला के समग्र कृतित्व में सूर्यबाला द्वारा रचित उपन्यासों में 'मेरे संधि पत्र',' सुबह के इंतजार तक', 'अग्निपंखी','दीक्षांत'और 'यामिनीकथा'का समावेश होता है।अभी-अभी उनका एक नया यात्रा वृतांत पर आधारित उपन्यास प्रकाशित हुआ है। परंतु वह मैंने अपने शोध प्रबंध के अंतर्गत समाहित नहीं किया है।परंतु हम सूर्यबाला द्वारा रचित पांच उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय। सूर्यबाला के कृतित्व के रूप में प्राप्त करेंगे। सूर्यबाला की कहानियों पर अगर हम नजर करें तो ऐसा लगता है कि यह कहानियां उनके अपने विचारों परिस्थितियों घटनाओं का ही लिखा चुका है सूर्यबाला ने

अपनी कहानियों के माध्यम से अलग-अलग विषयों समस्याओं परिवेश व परिस्थितियों पात्रों कथानक का एकदम सटीक एवं यथार्थ वर्णन किया है सूर्यबाला की कहानी संग्रह में ' कात्यायनी संवाद', 'एक इंद्रधनुष जुबेदा के नाम',' थाली भर चांद' ' सूर्यबाला के लोकप्रिय कहानियां', सांझवत्ती',' दिशाहीन' कहानी संग्रह का समावेश होता है। प्रत्येक कहानी संग्रह में नौ से लेकर सोलह कहानियां का संकलन किया गया है। इन कहानी संग्रह हो के आधार पर सूर्यबाला पाठकों के मन के अनछुए पहलुओं को छू जाती है।सूर्यबाला द्वारा रचितपांच लंबी कहानियों में मनोवैज्ञानिक धरातल पर मानसिक अंतर्दशाओं का अभिव्यंजना करती कहानियों का संकलन किया गया है। सूर्यबाला द्वारा रचित व्यंग्य साहित्यिक रचनाओं में ' धृतराष्ट्र टाइम्स', 'भगवान ने कहा था', 'देश सेवा के अखाड़े में','मेरे प्रिय व्यंग्य रचनाओं' का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया है।सूर्यबाला की एकमात्र बाल साहित्य रचना ' झगड़ा निपटा का दफ्तर' में कई बाल रचनाओं का समावेश किया गया है।इसका संक्षिप्त रुप भी हम इस अध्याय के अंतर्गत देखेंगे।

सूर्यबाला का कृतित्व:

सूर्यबाला ने अपने साहित्य के अंतर्गत उपन्यासों ,कहानियों ,व्यंग्य एवं बाल साहित्य की रचना की हैं।सूर्यबाला को साहित्य जगत में उनके उपन्यास 'यामिनी कथा' एवं 'मेरे संधि पत्र' से पहचान प्राप्त हुई है सूर्यबाला ने कुल मिलाकर पांच उपन्यास लिखे हैं जिसके अंतर्गत' मेरे संधिपत्र'' प्रथम है।

मेरे संधिपत्र

मेरे संधिपत्र' का मुख्य पात्र शिवा है उसका विवाह साधन संपन्न परिवार के विदुर रायजादा के साथ हुआ है इस उपन्यास में सूर्यबालाने शिवा के त्याग समर्पण की भावना को केंद्र स्थान में दर्शाया है ।

इस उपन्यास में सूर्यबाला ने शिवा के रूप में नारी के जीवन के एक सच्चे पहलू को सामने रखा है शिवा आज की नारी की मनोदशा का जीवंत उदाहरण है जो अपने जीवन के साथ संधि के रूप में हमेशा समझौता करती रहती है और यही उसके जीवन का अटल सत्य है जिसे उसने और समाज दोनों ने स्वीकार किया है।

सुबह के इंतजार तक

इस उपन्यास में सूर्यबाला ने एक मध्यमवर्गीय परिवार की समस्याओं के माध्यम से समाज के कई अनछुए पहलुओं को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया हैं।सूर्यबाला ने इस उपन्यास में मानुको केंद्र में रखते हुए समाज में एक बलात्कार पीड़ित

स्त्री के जीवन ,वह समाज में किस प्रकार जीवन के साथ समझौता करती हैं। उसके इसी जीवन संघर्ष को इस उपन्यास के माध्यम से दर्शाया हैं

अग्निपंखी

सूर्यबाला द्वारा रचित इस उपन्यास में सूर्यबाला ने अपने अंतर्मन से लड़ते हुए जय शंकर की जीवन यात्रा को बड़े द्वंदात्मक स्थिति से दर्शाया है। अग्निपंख की उपन्यास में सूर्य वाला ने कई समस्याओं को एक साथ उजागर किया है जो पाठकों को अंत तक बांधे रहते हैं इस उपन्यास के माध्यम से सूर्यबाला ने गांव की समस्या,रोजगार की समस्या,पारिवारिक समस्या, शहरी जीवन की समस्या, मनोवैज्ञानिक समस्या, मध्यमवर्गीय जीवन की समस्या और बहुत सी समस्याओं को निडर और स्पष्ट भाव से व्यक्त किया है।

दीक्षांत

सूर्यबाला ने शर्मा सर के माध्यम से अस्थाई अध्यापकों की मानसिक परिस्थितियों का वर्णन अत्यंत मार्मिक रूप से किया है। इसमें सूर्यबाला ने एक ईमानदार, विनम्र ,स्वभाव वाले,कर्तव्य परायण व्यक्तित्व को कैसा करुणामय अंत होता हैं उसे दर्शाया हैं

सूर्यबाला ने दीक्षांत उपन्यास में शिक्षा के क्षेत्र में फैले भ्रष्टाचार, संघर्ष ,राजनीति एक दूसरे के प्रति कार्यस्थल पर प्रतिस्पर्धा की भावना, एक दूसरों को नीचा दिखाना अगर हम इस उपन्यास का मुख्य उद्देश्य देखे तो इस उपन्यास में सूर्यबाला ने शिक्षा के क्षेत्र में व्यापारीकरण का जोर से विरोध करते हुए अपनी भावनाओं को पाठकों के सामने उजागर किया है।

यामिनी कथा

इस उपन्यास का मुख्य उद्देश्य नारी जीवन की उसके मानस की संवेदनात्मक दृष्टि से चर्चा करना है और ऐसे करने में सूर्यबाला को सफलता प्राप्त हुई है।इस उपन्यास में भी यामिनी एक बहुत ही संवेदनशील महिला है और उसी की संवेदनाओं को सूर्यबाला ने एक नया मोड़ दिया है।

इस उपन्यास में सूर्यबाला ने आधुनिक नारी के जीवन की सूक्ष्म से सूक्ष्म संवेदनाओं को विशेष रुप से यामिनी नामक स्त्री पात्र के द्वारा सार्थक किया हैं कैसे हो अपने जीवन यात्रा में अनेक सफल असफल अभिव्यक्ति का संतुलन बनाए रखती है

सूर्यबाला की कहानियां

सूर्यबाला का समकालीन महिला साहित्यकारों में एक विशेष स्थान है सूर्यबाला की कहानियां हमें मनुष्य के आधुनिक जीवन की यात्रा पर ले कर जाती है सूर्यबाला की कहानियों पर अगर हम नजर करें तो ऐसा लगता है कि यह कहानियां उनके अपने विचारों काही लेखा-जोखा है

सूर्यबाला द्वारा रचित कहानी संग्रह **कात्यायनी संवाद** में कुल मिलाकर सोलह कहानियों का संग्रह किया गया है। जिसका प्रकाशन ग्रंथ अकादमी ने किया है इस कहानी संग्रह की कहानियां सच और यथार्थ के धरातल पर आधारित है।सूर्यबाला द्वारा संकलित कहानी संग्रह '**एक इंद्रधनुष जुबेदा के नाम**' में कुल मिलाकर नौ कहानियों का संकलन किया गया है। जिसका संस्करण २००८ में हुआ था। ' **थाली भर चांद**' यह सूर्यबाला का कहानी संग्रह है जिसके अंतर्गत सोलह कहानियों का समावेश हुआ है। जिसका प्रकाशन सतसाहित्य प्रकाशन ने किया है। यह कहानियां अत्यंत मार्मिक, सरस ,जीवंत कहानियों जो सामान्य जनमानस के अंतर्मन को छू जाने वाली है।' **सांझवती**' कहानी संग्रह में कुल मिलाकर ग्यारह कहानियों का समावेश किया गया है। इसका प्रकाशन ग्रंथ अकादमी द्वारा हुआ है। इसका संस्करण २०१५ में किया गया था। सूर्यबाला द्वारा रचित कहानी संग्रह '**दिशाहीन**' का प्रकाशन प्रतिभा प्रतिष्ठान ने किया है। जिसके अंतर्गत नौ कहानियों का समावेश हुआ है। यह कहानियां बाजार और व्यवसायिकता के सारे दबावो से मुक्त होकर एकनिष्ठा भाव से कलम चलाने वाली सूर्यबाला का ' **दिशाहीन**' कहानी संग्रह पाठकों के मन के अनछुए पहलुओं को छू जाता है। ' **सूर्यबाला की पांच लंबी कहानियां**' मनोवैज्ञानिक धरातल पर मानसिक अंतर्दशाओं का अभीव्यंजन करती है। इस कहानी संग्रह में पांच बड़ी कहानियों का संग्रह किया गया है .जिसका प्रकाशन ग्रंथ अकादमी ने किया था।

सूर्यबाला का व्यंग्य साहित्य

प्रख्यात रचनाकार सूर्यबाला की व्यंग्य यात्रा उनकी कथा यात्रा के समांतर चलती है आई है।अंत:समकालीन लेखन के परिदृश्य में भी एक व्यंग्यकार के रूप में अपने विशिष्ट अंदाज के साथ उपस्थित रहती है। सूर्यबाला के व्यंग्य साहित्य को देखें तो सूर्यबाला ने आज तक कहीं व्यंग्य संकलन प्रकाशित हुए हैं। इसकी संख्या आगे पीछे भी हो सकती है। यहां पर कुछ व्यंग्य संकलनो की सूची प्रस्तुत है।

१. धृतराष्ट्र टाइम्स सन - सन २००१ विद्या विहार - प्रकाशन
२. भगवान ने कहा था - सन २०१० ग्रंथ अकादमी- प्रकाशन
३. देश सेवा के अखाड़े - (मेरी प्रिय व्यंग्य रचनाओं में समाहित है)
४. मेरी प्रिय व्यंग्य रचनाएं- सन २०११ पंचशील- प्रकाशन

सूर्यबाला का बाल साहित्य

सूर्यबाला ने बाल साहित्य में अब तक एक ही बाल पुस्तक को प्रकाशित किया है। परंतु वह एक ही बाल साहित्य संग्रह सूर्यबाला के बाल मानसशास्त्र के ज्ञान को पाठकों के सामने पूर्ण रूप से खरा उतरता है।

सूर्यबाला की बाल साहित्य की रचना' झगड़ा निपटा कर दफ्तर' में कुल मिलाकर तेरह बाल कहानियों का संग्रह हुआ है। जिसका प्रकाशन विद्या विहार प्रकाशन ने किया है इसका प्रथम संस्करण २०१२ में हुआ था।

द्वितीय अध्याय : (अ) उपन्यास का उद्भव एवं विकास

(ब) कहानी का उद्भव एवं विकास

(क) व्यंग्य का उद्भव और विकास

(ड) बाल साहित्य का उद्भव और विकास

द्वितीय अध्याय के अंतर्गत उपन्यास का उद्भव और विकास बताते हुए उपन्यास का अर्थ, प्रेमचंद पूर्वयुग में हिंदी उपन्यास, प्रेमचंदत्तेर युग के हिंदी उपन्यास, प्रेमचंदोत्तर युग के हिंदी उपन्यास आधुनिक युग आदि का विस्तार पूर्वक वर्णन होगा। कहानी का उद्भव एवं विकास में कहानी का महत्व, प्रेमचंदपूर्वयुग, प्रेमचंद प्रसाद युग ,उत्तर प्रेमचंद युग, स्वतंत्रता हिंदी कहानी,साठोत्तरी कहानी और आंचलिक कहानी,सचेतन कहानी,समकालीन कहानी आदि कहानी के उद्भव एवं विकास की यात्रा को दर्शाया जाएगा। व्यंग्य के उद्भव और विकास के अंतर्गत व्यंग्य का महत्व आरंभिक युग में व्यंग्य भक्तीकाल, रितिकाल का महत्व बताया गया है। इसके अंतर्गत स्वतंत्रयोत्तर युग, आधुनिक काल में व्यंग्य, स्वतंत्रता पूर्व उद्भव और विकास की यात्रा को दर्शाने का प्रयास रहेगा।बाल साहित्य का उद्भव और विकास का महत्व वीरगाथा काल से लेकर भक्तिकाल,रीतिकाल, आधुनिककाल तक बाल साहित्य का उद्भव और विकास को दर्शाया जाएग।इस अध्याय में उपन्यास,कहानी,बाल साहित्य की विकास गाथा को दर्शाया जायेगा।

इस अध्याय में उपन्यास,कहानी ,व्यंग्य बाल साहित्य की विकास गाथा को दर्शाने का मेरा उद्देश्य रहेगा। अध्याय के अंत में संदर्भ सूची प्रस्तुत की जाएगी।

तृतीय अध्याय : सूर्यबाला के उपन्यासों का मूल्यांकन

अस्सी के दशक में सूर्यबाला का नाम हिंदी साहित्य में बड़े आदर के साथ लिया जाता है। अगर हम यह कहें कि हम इस सदी में सूर्यबाला के उपन्यास की चर्चा ना करें तो कुछ अधूरा छूट जाएगा। ऐसा लगेगा सूर्यबाला ने jअपने उपन्यास में

समाज में व्याप्त समस्याओं को यथार्थ के धरातल पर प्रेषित किया है। जैसे समाज में परिवर्तन होता गया वैसा परिवर्तन स्त्रियों के जीवन में भी अति आवश्यक है। सूर्यबाला द्वारा रचित उपन्यासों में प्रमुख नायिका कमजोर नहीं है। सूर्यबाला की सारी नायिकाये यथार्थ के धरातल पर अपने आप को एक मजबूत स्त्री पात्रों के रूप में लिखित करती हैं।

समकालीन उपन्यास रचनाकारों में ऐसे प्रखर रचनाओं को प्रस्तुत करने वाली लेखिकाओं में सूर्यबाला का नाम अत्यंत आदर भाव से लिया जाता है।हिंदी साहित्य में सूर्यबाला में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान बनाया है। सूर्यबाला के उपन्यासों के मूल्यांकन के अंतर्गत सूर्यबाला द्वारा रचित उपन्यासों में 'सुबह के इंतजार तक,'अग्निपंखी' ' दीक्षांत','मेरेसंधिपत्र,और ' यामिनी कथा' का समावेश होता है। इस अध्याय में मैंने उपन्यासों का उपन्यास के तत्व के आधार पर जैसे उपन्यास का कथानक,पात्र गौण पात्र, संवाद, देशकाल एवं वातावरण, भाषा शैली का उपन्यास के उद्देश्य का विवरण दूंगी।सूर्यबाला के उपन्यासों में समाहित प्रत्येक अनदेखे पहलुओं को उजागर करने का मेरा हेतु तो रहेगा। हर उपन्यास का मेरा निष्पक्ष रुप से मूल्यांकन करने का प्रयास रहेगा अध्याय के अंत में उपन्यास से संदर्भ सूची प्रस्तुत की जाएगी। हालांकि सूर्यबाला के उपन्यासों का मूल्यांकन करना उनके विचारों को अभिव्यक्त करने का प्रयत्न रहेगा तृतीय अध्याय का मूल्यांकन करते समय उपन्यास के उद्देश्य को दर्शाने का मेरा हेतु अथवा प्रयास रहेगा।

चतुर्थ अध्याय- सूर्यबाला की कहानियों का मूल्यांकन

वर्तमान समय में अगर हम देखते हैं तो कहानी साहित्य सबसे लोकप्रिय साहित्य बनकर उभरा है। कहानी का स्वरूप लक्षणों को बहुत से लेखकों ने अपने मत प्रकट किए हैं। इसी कारण कहानी की साहित्यिक रचना में हमें काफी परिवर्तन देखने को मिलता है ।सूर्यबाला ने अपनी कहानियों में समाज की छोटी-बड़ी समस्याओं को वर्णित किया है कहानी का मूल्यांकन कहानी के तत्वों के आधार पर किया जाता है सूर्यबाला की सभी कहानियां इन तत्वों के आधार पर अपने आप में अपनी प्रखरता साबित करती है। किसी भी कहानी का उद्देश्य पाठक का मनोरंजन करना,समाज में नवचेतना का निर्माण करना, समाज सुधार के लिए प्रेरणा स्त्रोत बनना, मनोरंजन के साथ-साथ सिद्धांतों को भी स्थापित करना, कहानीकार का मुख्य उद्देश्य होता है जिसमें सूर्यबाला ने अपने आप को स्थापित किया है।

चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत सूर्यबाला द्वारा रचित उनके कहानी संग्रहो जैसे 'एक इंद्रधनुष जुबेदा के नाम',' दिशाहीन','थालीभर चांद',' कात्यायनी संवाद','सांझवती'," पांच लंबी कहानियां', ' सूर्यबाला के लोकप्रिय कहानियां'आदि कहानी संग्रह में संकलित कहानियों का कहानी के तत्व जैसे कहानी में कथा, कहानी के संवाद, चरित्र चित्रण, भाषा शैली, कहानी का उद्देश्य आदि तत्व को ध्यान में रखते हुए सूर्यबाला द्वारा रचित कहानियों का मूल्यांकन करने का मेरा हेतु रहेगा। सूर्यबाला द्वारा

रचित कहानियों का कथ्य,पात्र संवाद,चरित्र चित्रण, भाषा शैली, उद्देश्य,के हर पहलू पर दृष्टि डाली जाएगी।इस अध्याय के अंतर्गत लेखिका के कहानी संग्रह की कहानियों में मानव जीवन से जुड़े आर्थिक, मानसिक, सामाजिक संघर्षों की गाथाओं का वर्णन पत्रों के माध्यम से दिया गया है। जो पाठकों के मन स्थिति पर अपनी गहरी छाप अंकित करता है। सूर्यबाला ने अपनी

कहानियों में समाज की छोटी-बड़ी समस्याओं को वर्णित किया है।किसी भी कहानी का मूल्यांकन कहानी के तत्वों के आधार पर ही किया जाता है और सूर्यबाला की सभी कहानियों में इन तत्वों का समावेश होता है। सूर्यबाला ने कहानी की रचना का विधान ध्यान में रखते हुए सभी तत्वों को ध्यान रखते हुए अपनी कहानियों की रचना की है।सूर्यबाला अपनी कहानियों के माध्यम से अपने आपको साहित्य के क्षेत्र में एक प्रखर लेखिका के रूप में स्थापित किया हैं।

पंचम अध्याय - सूर्यबाला का व्यंग्य एवं बाल साहित्य का मूल्यांकन

सूर्यबाला समकालीन हिंदी साहित्य जगत में एक बहु चर्चित लेखिका के रूप में उभरकर हमारे सामने आती है। सूर्यबाला की व्यंग्य रचनाओं में ' अजगर करे न चाकरी', 'धृतराष्ट्र टाइम्स', ' भगवान ने कहा था,' ' कुछ अदद जाहिलो के नाम' व्यंग्य संग्रह में सूर्यबाला द्वारा रचित व्यंग्य रचनाओं को संकलित किया गया है।अपने व्यंग्य रचनाओं में सूर्यबाला तानों की प्रत्यंचा से तीर मारती हमें दृष्टिगत होती है। छोटे-छोटे व्यंग्य बाण हमारे चेहरे पर मुस्कान ले आते हैं और साथ में मानव मन की अवस्था को भी बदलने का दम रखते हैं। हम सूर्यबाला की व्यंग्य रचनाओं का व्यंग्य के तत्वों के आधार बनाकर उनका मूल्यांकन करने का प्रयास करेगें।सूर्यबाला के व्यंग में विसंगतियों की उपस्थिति, उनके प्रगतिशील एवं सकारात्मक सोच, उनके द्वारा की गई नैतिक मूल्यों की रक्षा, उनका गहन चिंतन, पात्रों का चयन, व्यक्ति एवं समाज का पतन, भाषा शैली,आलोचना, बौद्धिकता आदि को ध्यान में रखते हुए सूर्यबाला द्वारा रचित व्यंग्य रचानाओ का मूल्यांकन करना मेरा प्रयत्न रहेगा। सूर्यबाला के व्यंग्य रचनाओ को मैंने भिन्न-भिन्न भागों में विभाजित करके मूल्यांकन किया जायेगा। जिसके अंतर्गत साहित्यिक व्यंग्य रचनाओं का मूल्यांकन, राजनीतिक व्यंग्य रचनाओं का मूल्यांकन,सामाजिक विसंगतियों पर आधारित व्यंग्य रचनाओं का मूल्यांकन,नारी जीवन की समस्याओं पर आधारित रचनाओं का मूल्यांकन इस अध्याय के अंतर्गत किया जाएगा।

लेखिका ने अपने एक साक्षात्कार में स्वीकार किया है कि "वह मूल रूप से एक कथाकार हैं।इसलिए उनके व्यंग्य स्यास लेखन नहीं है। परंतु वह उन्होंने समय समाज और जीवन की सभी विसंगतियों से प्रसार होने वाली परिस्थितियों का चित्रण किया है।सूर्यबाला ने कम मात्रा में व्यंग्य की रचना की रचना की हैं परंतु जितने भी व्यंग्य उन्होंने लिखे हैं वह सहज,सरल और सशक्त और गुणवत्ता से भरपूर है ।उनके समक्ष बड़े-बड़े व्यंग्यकार फीके पड़ जाते है। इसलिए समकालीन व्यंग्यकारों में सूर्यबाला का स्थान महत्वपूर्ण हैं और इसी वजह से व्यंग्य साहित्य में उन्हें सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है।

बच्चों में जिज्ञासा एवं कल्पना इतनी बलवती और विस्तृत होती है कि उनकी भावनाएं मानव जीवन के हर पहलुओं को छूती है। बच्चों में हमेशा नया जानने की उत्सुकता बनी रहती है फिर भी उनके लिए भावनात्मक रूप से सुरक्षा अधिक आवश्यक होती है। हिंदी में बाल साहित्य का एक बड़ा स्त्रोत पंचतंत्र की कथाएं हैं, जो बच्चों के मनोरंजन के साथ-साथ उनमें मूल्यों का रोपण भी करती है। सूर्यबाला ने बच्चों को केंद्र स्थान में रखते हुए बाल सुलभ रचनाओं का निर्माण किया है।जो बच्चों को पढ़ते वक्त मनोरंजक लगती है इसके साथ ही सूर्यबाला ने अपनी बाल रचनाओं में बच्चों के स्वभाव ,उनकी आदते मां-बाप का स्वभाव तथा बच्चों के मूल्यरोपन में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

हिंदी का बाल साहित्य कितना समृद्ध है इसे जानने पढ़ने का प्रयास अभी तक कम ही हुआ है।हिंदी का बाल साहित्य भारत में बोली जाने वाली अनेक भाषाओं की तुलना में कहीं अधिक समृद्ध है। स्वतंत्रता के बाद सभी विधाओं में पर्याप्त और श्रेष्ठ बाल साहित्य लिखा गया है। सूर्यबाला द्वारा रचित बाल साहित्य में उनके द्वारा रचित कृति 'झगड़ा निपट आकर दफ्तर'में बच्चों को केंद्र स्थान में रखते हुए बाल सुलभ रचनाओं का निर्माण किया है।बाल साहित्य के अनेक उद्देश्य है इसमें एक तरह से बाल जीवन का मनोरंजक अध्ययन होता है, बालक में उत्सुकता, रचनात्मक प्रवृत्ति, उपार्जन प्रवृत्ति, आत्म दर्शन की प्रवृत्ति,द्वंद की प्रवृत्ति, विनय की प्रवृत्ति,स्पर्धा, सहानुभूति आदि प्रवृतियां है।मूल्यांकन करते समय बालों को की जिज्ञासा एवं कल्पना ,भावनाएं पहलुओं का भी ध्यान रखा जाता है। बच्चों में मनोरंजन के साथ-साथ उनमें मूल्यों का रोपण,देशभक्ति,समानता की भावना, निश्चल मनोभाव,आदि को दर्शाया जाएगा।'झगड़ा निपटा कर दफ्तर' में तेरह बाल रचनाओं का समावेश हुआ है ।

बच्चे देश की धरोहर होते हैं उनका लालन-पालन सब मां-बाप के व्यवहार अनुसार ही होता है।इन तेरह वार्ताओ में सूर्यबाला ने बच्चों के साथ-साथ पाठकों का भी मनोरंजन किया है। सूर्यबाला अपनी रचनाओं के माध्यम से बच्चा पार्टी में मूल्यों रोपन की भी शिक्षा प्रदान करना चाहती हैं। अध्याय के अंत में संदर्भ सूची पेश की जाएगी।

षष्टम अध्याय- (अ) सूर्यबाला के उपन्यासों में निरूपित समस्याएं

(ब) सूर्यबाला के कहानियों में निरूपित समस्याएं

(क) व्यंग्य साहित्य में निरूपित समस्याए

(ड) बाल साहित्य में निरूपित समस्याए

इस अध्याय के अंतर्गत में सूर्यबाला द्वारा रचित उपन्यास, कहानी व्यंग्य ,बाल साहित्य में निरूपित समस्याओं को उजागर करने का प्रयास करूंगी।सूर्यबाला के उपन्यासों में व्याप्त समस्याओं में सामाजिक समस्या, पारिवारिक समस्या,

आर्थिक समस्या, धार्मिक समस्या, राजनीतिक समस्या,महानगरीय समस्या, मूल्य विघटन की समस्या और नारी शोषण की समस्याओं का सूक्ष्म रूप से चर्चा करने का मेरा उद्देश्य रहेगा।इसके उपरांत सूर्यबाला द्वारा रचित कहानियों में समाहित समस्याओं में नारी जीवन की समस्या, पारिवारिक जीवन की समस्या, मूल्य विघटन,पात्रों की मनोदशा, पात्रों में निहित संवेदनहीनता, शहरी जीवन की समस्या,आदि पर प्रकाश डालने का प्रयास करूंगी इसके अंतर्गत समाज का अर्थ एवं परिभाषा को भी दर्शाया जायेगा।

सूर्यबाला ने व्यंग्य साहित्य की रचना की है जिसके माध्यम से ही सूर्यबाला ने अन्य व्यंग्य रचनाकारों की ही तरह वर्गहीन समाज की स्थापना करना चाहती है।लेखिका का मुख्य उद्देश्य समाज में सुधार करना एवं समाज में परिवर्तन लाना है। व्यंग्य साहित्य में सूर्यबाला ने भ्रष्टाचार की समस्या, आतंकवाद की समस्या, गरीबी की समस्या, भुखमरी की समस्या, बाढ़ की समस्या, बेरोजगारी की समस्या,बलात्कार की समस्या, दंगों की समस्या, हिंदी लेखकों की समस्या, हिंदी भाषा की समस्या, स्त्री शोषण की समस्या, विदेश पलायन की समस्या का उल्लेख सूर्यबाला ने अपने व्यंग्य के माध्यम से किया है। इन सारी समस्याओं को सूर्यबाला ने अपने प्रखर एवं धारदार लेखन से उजागर किया है।

सूर्यबाला ने अपनी लेखनी का जादू बाल साहित्य में भी चलाए हैं उनके द्वारा रचित बाल रचना 'झगड़ा निपटा कर दफ्तर' पुस्तक में बच्चों से संबंधित मनोरंजक कहानियों का समावेश किया गया है।जिसके अंतर्गत तेरह कहानियां को संकलित किया गया है जिसमें हम सरल भाषा,नटखट संवाद,आकर्षक मनोभाव, बच्चों की मानसिकता और भावनाओं का,मन के विचारों को मुक्त रूप से उनके मानसिक धरातल पर जाकर सूर्यबाला ने वर्णन किया है।

इसके साथ-साथ सूर्यबाला ने अपनी इस कृति में कई समस्याओं को पाठकों के सामने उजागर किया है जिसमें बच्चों में झगड़ो की समस्या, बच्चों की गलत अनुकरण की समस्या, लड़का-लड़की अर्थात(लिंगभेद)की समस्या, बच्चों को मारने पीटने की समस्या, बच्चों में लालच की समस्या और बच्चों में चुगल खोरी की समस्या जैसी अन्य कई समस्याओं को सूर्यबाला ने पाठकों के सामने सहज रूप से बाल भाषा को माध्यम बनाकर पेश किया है। अध्याय के अंत में संदर्भ सूची अलग से दी जाएगी।

सप्तम अध्याय- समकालीन हिंदी साहित्यकारों में सूर्यबाला का स्थान एवं साक्षात्कार

महिलाओं को शिक्षा, सत्ता,संपत्ति से उस समय स्त्रियों को उनके हक अधिकारों से दूर रखा जाता था। आज भारत की स्त्रियों को जो आजादी अधिकार मिले हैं वह बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से से ही मिलने शुरु हुए। स्त्रियों के प्रति इस बदलाव का स्त्री चेतना ने महिलाओं के जीवन में एक नई दिशा प्रदान की आज की महिलाएं जो एक हक और स्वतंत्रता प्राप्ति

के लिए लढ़ती है वह पूर्ववर्ती महिला आंदोलनकारियों, समाजसेवियों और चिंतकों के अथक प्रयासों का ही परिणाम है।समकालीन लेखिकाओं ने आज की जीवन शैली में नारी जीवन के परिवर्तित मूल्यों को अत्यंत मार्मिक ढंग से बताया है।

समकालीन महिला साहित्यकारों ने प्रामाणिक एवं वर्तमान परिस्थितियों का विश्लेषण किया है। समकालीन था आधुनिकता का विस्तार है समकालीन ता का अर्थ मात्र काल बोध नहीं है पर आधुनिकता का एक साथ काल बोधक और मूल्य बोधक दोनों है । भारत देश को आजादी मिलने से पूर्व महिला लेखन भावना प्रधान था अपने घुटन पीड़ा से बाहर आने के लिए महिलाएं छटपटाहट करती थी। उनके लेखन में उस काल की उनके मन की पीड़ा, त्रासदी और जीवन का यथार्थ था। उस समय की स्त्रियों को उनके हक अधिकारों से हमेशा दूर रखा जाता था।आज भारत की स्त्रियों को जो आजादी का संपूर्ण अधिकार प्राप्त हुए है। वह बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध ही लेकर आया हैं, इस अध्याय के अंतर्गत समकालीनता की व्याख्या दी जायेगी। समकालीन महिला साहित्यकारों में हम मनु भंडारी, उषा प्रियंवदा, कृष्णा सोबती, ममता कालिया, मृणाल पांडे, मृदुला गर्ग,चित्रा मुद्गल मैत्री पुष्पा, प्रभा खेतान आदि महिला साहित्यकारों का संक्षिप्त परिचय उनकी कृतियां, सम्मान आदि का उल्लेख किया जाएग।

उसके पश्चात सूर्यबाला का समकालीन हिंदी साहित्य में योगदान, स्थान, व्यक्तित्व, पारिवारिक जीवन,शिक्षा,साहित्य में उनके लिए प्रेरणास्त्रोत सूर्यबाला द्वारा रचित रचनाएं आदि का उल्लेख करते हुए साक्षात्कार करने का रहेगा मेरा प्रयास रहेगा।(कोरोना काल को देखते हुए जैसे सूर्यबाला जी योग्य समझे उस माध्यम को स्त्रोत बनाकर द्वारा जैसे - टेलिफोनिक रिकॉर्डिंग, गूगलमीट,व्हाट्सएप के द्वारा भी साक्षात्कार लेने का मेरा प्रयास हो सकता है।

उपसंहार

मेरे शोध प्रबंध के अंत में उपसंहार रहेगा। जिसके अंतर्गत में प्रथम अध्याय में सूर्यबाला के जन्म, परिवार, मात पिता , अंतरंग, बहिरंग पारिवारिक जीवन, वैवाहिक जीवन, शिक्षा, कार्य क्षेत्र ,उनकी कृतियों का संक्षिप्त रूप से अध्ययन का उपसंहार दिया जाएगा। द्वितीय अध्याय के अंतर्गत उपन्यास के उद्भव और विकास की यात्रा को दर्शाया जाएगा। तृतीय अध्याय के अंतर्गत कहानी का उद्भव और विकास को दर्शाते हुए कहानी के विकास यात्रा होंगी। तृतीय अध्याय के अंतर्गत उपन्यासों का मूल्यांकन करते हुए सूर्यबाला के उपन्यास के तत्वों के आधार पर मूल्यांकन किया जाएगा जिसके अंतर्गत उपन्यासों का कथानक, पात्र, गौण पात्र, देशकाल वातावरण,भाषा शैली, उद्देश्य आदि की चर्चा की जाएगी।

वही चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत कहानी के तत्वों के आधार पर सूर्यबाला की कहानी संग्रह में समाहित हुई कहानियों का कहानी के तत्वों के आधार पर मूल्यांकन करना होगा। पंचम अध्याय के अंतर्गत सूर्यबाला के व्यंग्य एवं बाल साहित्य का मूल्यांकन करते हुए उसका सारांश उपसंहार में समाहित किया जाएगा।

षष्टम अध्याय अध्याय के अंतर्गत आने वाले सूर्यबाला के उपन्यासों में निरूपित समस्याएं, सूर्यबाला की कहानी साहित्य में निरूपित समस्याएं, सूर्यबाला के व्यंग्य साहित्य में निरूपित समस्याएं, सूर्यबाला के बाल साहित्य में निरूपित समस्याएं, आदि का उद्देश्य के साथ उपसंहार में समाहित किया जाएगा ।सप्तम अध्याय तक के चिंतन का सार निष्कर्ष के रूप में रखूंगी। सूर्यबालाजी के गद्य साहित्य का संक्षिप्त सार होगा वैसे भी उनके प्रत्येक रचना अपने समय की विद्रूपता और व्यक्ति की संवेदनाओं को तेजी से निगलते व्यवसायिकता का प्रतिनिधित्व करती है। कहानी चाहे वर्गभेद के ध्रुवंतों की हो चाहे आज की अंधी दौड़ और चाहे रितते मानवीय संबंधों की हो, या प्रेम के गहरे एहसासों की हर रचना अपने समय की समग्रता में प्रवेश करने की कोशिश करती हैं।

परिशिष्ट १ : के अंतर्गत सहायक ग्रंथों की सूची तथा अन्य सामग्री का निर्देश किया जाएगा

संदर्भ ग्रंथ सूची

(क) सहायक ग्रंथ

(ख) सहायक शोध प्रबंध एवं कोष ग्रंथों की सूची

(ग) पत्र एवं पत्रिकाएं

(घ) अन्य सामग्री